SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. SESSION – 2020 - 22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – Facilitative learning - Teaching environ-ments.

DATE - 05/07/2021

Topic-4

अधिगम-शिक्षण के लिए सुगम माहौल का निर्माण प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियाँ।

अधिगम-शिक्षण के लिए सुगम माहौल से तात्पर्य शिक्षण-अधिगम वातावरण है। शिक्षण अधिगम विधियों और तकनीकों के अतिरिक्त, शिक्षण अधिगम के समय उपलब्ध परिस्थितियों, वातावरण तथा संसाधनों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और उसके परिणामों को उपयुक्त तथा अनुपयुक्त दिशा प्रदान करने में बहुत बड़ा हाथ रहता है।

शिक्षण अधिगम सम्बन्धी उपयुक्त परिस्थितियाँ एवं वातावरण – (Proper Conductive Environment and teaching learning Situations).

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और उसके परिणाम शिक्षण अधिगम के दौरान उपलब्ध परिस्थितियों और वातावरण पर बहुत कुछ निर्भर करते हैं। जितनी अधिक उपयुक्त परिस्थितियाँ और वातावरण सीखने और सिखाने वाले को प्राप्त होगा, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सफलता पाने की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी। इस प्रकार वातावरण अन्य परिस्थितियाँ निम्न प्रकार की हो सकती हैं—

(a) शिक्षण अधिगम के समय उचित बैठने, खड़े होने तथा कार्य करने की व्यवस्था।

(b) पूर्ण शान्त और कोलाहल शून्य वातावरण।

(c) - ध्यान में विघ्न डालने वाली सभी सम्भावित बातों पर उचित नियंत्रण।

(d) अध्यापक का जनतन्त्रात्मक, निष्पक्ष, एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार।

(e) स्वस्थ एवं सहयोगपूर्ण प्रतिस्पर्धा के अवसर।

(f) घर का सहयोगपूर्ण एवं उपयुक्त वातावरण

(g) विद्यार्थी अध्यापकों के मध्य उचित अन्तःक्रिया एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण।

(h) विद्यार्थियों को स्वयं आगेबढ़कर ज्ञान प्राप्त करने तथा आत्म-प्रकाशन एवं रचनात्मकता के लिए उपयुक्त अवसरों की प्राप्ति।

स्पष्ट है कि इसप्रकार के अवसर और सुविधाओं से युक्त शिक्षण अधिगम वातावरण में शिक्षक और शिक्षार्थियों को शिक्षण अधिगम मार्ग पर आगे बढ़ने में जितना सहयोग प्राप्त होगा विपरीत परिस्थितियों में उन्हें उतनी ही परेशानी होगी। अतः शिक्षण अधिगम वातावरण और परिस्थितियाँ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को काफी सीमा तक प्रभावित करती रहती हैं।

शिक्षण-अधिगम में वातावरण सम्बन्धी चुनौतियाँ

शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया पर वातावरण का भी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। वातावरण सम्बन्धी चुनौतियों को हम निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकते हैं —

1. भौतिक वातावरण :-

यह देखा गया है कि सर्दी के मौसम की अपेक्षा गर्मी के मौसम में बच्चे शीघ्र थक जाते हैं। अति शीत, अति गर्मी और अति वर्षा के मौसम में भी शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया सही रूप में नहीं चलती। शिक्षण अधिगम के स्थान पर शुद्ध वायु और प्रकाश की कितनी अच्छी व्यवस्था है और वहाँ से बाधकता दूर करने की कितनी व्यवस्था की गई है, इन सभी का प्रभाव शिक्षण एवं अधिगम पर होता है। शुद्ध वायु एवं पर्याप्त प्रकाश के अभाव में बच्चे शीघ्र थक जाते हैं जिसका शिक्षण के सीखने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

2. सामाजिक वातावरण :-

शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में सामाजिक अंतःक्रिया का बड़ा महत्व होता है यदि बच्चों को परिवार, समाज, समुदाय और विद्यालय, सभी स्थानों पर उपयुक्त सामाजिक एवं शैक्षिक पर्यावरण मिलता है तो शिक्षण एवं सीखना प्रभावी होता है अन्यथा नहीं। इनमें से यदि एक भी स्थान का पर्यावरण अनुकूल नहीं होता तो शिक्षण एवं सीखना

उतना ही कम प्रभावशील होता है। सामाजिक पर्यावरण में समूहशीलता (Group dynamics), व्यवस्था (order) और अनुशासन (discipline) का बड़ा महत्व होता है।

3. शिक्षण एवं सीखने का समय —

शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया किस प्रकार चल रही है, इसका प्रभाव भी पड़ता है। इसके लिए गर्म देशों में प्रातःकाल का ठंडे देशों में दिन के मध्य का समय अनुकूल होता है। समय के साथ-साथ शिक्षण एवं सीखने पर समयावधि का प्रभाव भी पड़ता है। शिशु किसी विषय पर लम्बे समय तक ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते इस लिए उनके लिए कम समयावधि के कलांश (Periods) होना उचित होता है।

4. थकान एवं विश्राम —

यह देखा गया है कि थकान की स्थिति में न शिक्षक अपना कार्य सही ढंग से कर पाते हैं और न शिक्षार्थी। तभी विद्यालय की समय-सारणी बनाते समय इसका ध्यान रखा जाता है। कठिन विषय पहले व आसान विषय बाद में रखे जाते हैं, एक कठिन विषय के बाद दूसरा सरल विषय रखा जाता है और बीच में विश्राम के लिए अवकाश दिया जाता है।

5. कक्षाओं का एक-दूसरे के निकट होना —

अधिकांश कक्षायें एक दूसरे के इतनी निकट होती हैं कि एक कक्षा का शोर दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों के काम में बाधक बन जाता है। इससे पढ़ाई की हानि होती है। अत: कक्षा से कक्षा की बीच की दूरी मानक के अनुसार रखना चाहिए।